CBSE Test Paper 02
Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   "लेकिन मैं तो संन्यासी हूँ।" "आप सब छोड़कर क्यों चले आए?" "प्रभु की इच्छा थीं।" वह बालकों की सी सरलता से मुस्कराकर कहते, "माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था कि लड़का हाथ से गया। और सचमुच इंजीनियरिंग के अन्तिम वर्ष की पढ़ाई छोड़ फादर बुल्के संन्यासी होने जब धर्मगुरु के पास गए और कहा कि मैं संन्यास लेना चाहता हूँ तथा एक शर्त रखी (संन्यास लेते समय संन्यास चाहने वाला शर्त रख सकता है कि मैं भारत जाऊँगा।" "भारत जाने की बात क्यों उठी?" "नहीं जानता. बस मन में यह था।"

   i. फादर बुल्के सब कुछ छोड़कर क्यों चले आए?
   ii. फादर बुल्के ने इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष की पढ़ाई क्यों छोड़ दी?
   iii. फादर बुल्के ने संन्यास लेते समय क्या शर्त रखी और इसका क्या कारण था?

2. फादर बुल्के की जन्मभूमि और कर्मभूमि कौन-कौनसी थीं ? कर्मभूमि की किन विशेषताओं से वे प्रभावित थे ?

3. फ़ादर कामिल बुल्के ने संन्यासी की परम्परागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

4. फ़ादर बुल्के की यातना भरी मृत्यु पर लेखक के मन में क्या भाव उत्पन्न हुए और क्यों?

5. लेखक के स्मृति-पटल पर उस संन्यासी के कौन-कौन से चित्र बार-बार उभरते हैं? मानवीय करुणा की दिव्य चमक पाठ के आधार पर लिखिए।

6. आप फ़ादर बुल्के के आदर्श जीवन के किस कार्य से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, जिसके कारण वे आपके लिए प्रशंसनीय हो सकते हैं?

CBSE Test Paper 02

Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

Answer

1.
    i. प्रभु की इच्छा के कारण फादर बुल्के सब कुछ छोड़कर चले आए।
    ii. फादर बुल्के ने इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष की पढ़ाई इसलिए छोड़ दी क्योंकि वे संन्यास ग्रहण कर संन्यासी बनना चाहते थे।
    iii. फादर बुल्के ने संन्यास लेते समय भारत जाने की शर्त रखी और इसका यह कारण था कि उनके मन में भारतीय संस्कृति और भारत के प्रति लगाव था | इसके साथ ही वे हिंदी प्रेमी भी थे |
2. फादर बुल्के की जन्मभूमि बेल्जियम में रेम्सचेंपल थी | उन्होंने अपनी कर्मभूमि भारत को बनाया। कर्मभूमि भारत की सभ्यता और संस्कृति स वे बहुत प्रभावित थे | साथ ही उनके मन में हिन्दू धर्म के मर्म को समझने की जिज्ञासा थी|
3. फ़ादर कामिले बुल्के ईसाई धर्माचार में ही अपना समय व्यतीत करते थे। संन्यासी होते हुए भी अपने परिचितों के साथ वे गहरा लगाव रखते थे तथा उनसे मिलने के लिए सदा आतुर रहते थे। एक बार रिश्ता बनाने के बाद उसे आजन्म निभाते | अन्य धर्म वालों के उत्सवों संस्कारों में भी वे घर के बड़े बुजुर्ग की भाँति शामिल होते थे। इस प्रकार उन्होंने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है |
4. लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को फादर की मृत्यु पर अत्यधिक पीड़ा हो रही थी। लेखक के अनुसार फादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। उनके मन में सवाल उठता है कि किस ईश्वर से पूछे कि जिसकी रगों में दूसरों के लिए हमेशा मधुरता के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, उसके लिए इस जहर का विधान क्यों बनाया ? जिनको द्वेष छु भी न पाया। जो हमेशा दूसरों के लिए देवदार की छाया बनकर खड़े रहते थे, ऐसे पुण्यात्मा महापुरुष के जीवन में इतना कष्ट क्यों? लेखक के अनुसार ऐसे सन्यासी महापुरुष विरले ही होते हैं जो अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिए व्यतीत कर देते हैं । फिर भी ईश्वर ऐसे महापुरुषों को ऐसी यातना भरी मृत्यु क्यों देते हैं? इस प्रकार के अनेकों भाव फादर कामिल बुल्के की मृत्यु पर लेखक के मन में उभर कर आए।
5. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक'पाठ के आधार पर लेखक के स्मृति पटल पर सन्यासी फादर बुल्के के अनेक चित्र उभर कर सामने आते हैं। जो लेखक के मन मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ते हैं। फादर का प्रभावशाली व्यक्तित्व- गोरा रंग,नीली आंखें, भूरी दाढ़ी, लंबा कद, सफेद चोगा उन्हें उनकी सादगी की याद दिलाता है । फादर के अंदर मानवीय गुणों का भंडार था। वह प्रेम और करुणा की सजीव मूर्ति थे। सन्यासी होकर भी संबंधों की अंतरंगता को बनाए रखते थे। प्रिय जनों के प्रति प्रेम, स्नेह,अपनत्व की भावना उनके अंदर समाई हुई थी। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की उनकी तीव्र इच्छा थी। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से शोध प्रबंध 'रामकथा:उत्पत्ति और विकास'की रचना की । वे सुख में शुभाशीष तथा दुख में सांत्वना के जादू भरे शब्दों से दूसरों को शांति प्रदान करने का अद्भुत गुण रखते थे। यही बातें लेखक के स्मृति पटल पर बार बार घूमती हैं।
6. फादर कामिल बुल्के आदर्शों के धनी थे। जब भी किसी के घर कोई उत्सव और संस्कार होते, तो वे बड़े भाई और पुरोहित की तरह सभी को आशीर्वाद देते थे । उनकी बाँहे गले लगाने को उत्सुक रहती थी। ममता और अपनेपन की भावना से

भरपूर वह व्यक्ति हर किसी के लिए प्रिय और आदर्श था। फादर कामिल बुल्के विदेशी थे,फिर भी भारत से उन्हें अत्यधिक प्रेम था और सबसे अच्छी बात कि उनका हिंदी से अधिक लगाव था । उन्होंने हिंदी का भरपूर ज्ञान प्राप्त कर 'राम कथा: उत्पत्ति और विकास' नामक ग्रंथ पूरा किया। उन्होंने कई नाटकों का हिंदी में रूपांतर किया। हिंदी की दशा को देख कर अत्यधिक चिंतित रहते थे। हिंदी को राष्ट्रभाषा का उचित स्थान दिलाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किए। इन्हें कार्यों के द्वारा वे सब के लिए प्शंसनीय हो गए।